कविता

खेले-खेल में

कविता बिष्ट*

आओ मिलकर खेलें खेल,
अंकों का है मेल अनेक।

पढ़े पहाड़ा बन जाए ठाट,
ना आए तो लग जाए जाम।

विभिन्न आकारों का अपना ही मान,
खेल-खेल में मिल जाता सम्मान।

देखो इठलाकर बैठी कोण,
अलग-अलग है इसका मोल।

जोड़ने और घटाने का है अपना ही रंग,
गुणा और भाग को लेकर संग।

भिन्न का स्वाद चखते सब,
पाव और आधा लेकर संग।

आरोही और अवरोही का देखो तमाशा,
सबको आ जाए यह शिक्षक की एक अभिलाषा।

क्षेत्र और परिमाप को भूलें कैसे,
बचे नहीं कोई रुपये पैसे।

आओ सब पढ़ें गणित,
खेल-खेल में बन जाए गुनीत।

© NCERT not to be republished

*मुख्याध्यापिका, केंद्रीय विद्यालय एनसीईआरटी., नयी दिल्ली